रजिस्ट्रेशन संख्या :– R.N.I. 36355/79
डाक पंजीकरण संख्या :– Kanpur City – 67/2015–2017

चिकित्सा–विज्ञान और प्रौद्योगिक जगत में सर्वाधिक प्रकाशित होने वाला निष्पक्ष समाचार पत्र

पाक्षिक

इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट

वर्ष –39 ● अंक –5 ● कानपुर 1 से 15 मार्च 2017 ● प्रधान सम्पादक – डा0 एम0 एच0 इदरीसी ● वार्षिक मूल्य – ₹ 100

पाठ्यक्रम में हो जायेगा अमूल–चूल परिवर्तन

- ✓ युद्धस्तर पर हो चुका है कार्य प्रारम्भ
- ✓ समिति कर रही है निरन्तर मॉनीटरिंग
- ✓ समानान्तर नहीं समकक्ष होगा पाठ्यक्रम
- ✓ पाठ्यक्रम का शासन से होगा अनुमोदन
- ✓ प्रक्रिया लगभग हो चुकी है पूर्ण

इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति को अन्य प्रचलित चिकित्सा पद्धतियों की भाँति स्तर दिलाने के लिये पूरे देश के संगठन अपने–अपने स्तर से प्रयास कर रहे हैं परन्तु वह प्रयास अभी तक सफल नहीं पा रहे हैं उसका एक मात्र कारण है कि वर्तमान में जो प्रचलित पाठ्यक्रम है वह मान्यता के स्तर को नहीं पा पा रहा है अस्तु बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 की प्रबन्ध समिति ने इस विषय पर गम्भीर चिन्तन किया और मान्यता के विभिन्न पहलुओं पर गहरायी से अध्ययन किया तदुपरान्त अन्य मान्यता प्राप्त चिकित्सा पद्धतियों के पाठ्यक्रम विशेषज्ञों से मन्त्रणा की, कई चक्रों की चर्चा के बाद बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 की प्रबन्ध समिति ने यह निर्णय लिया कि पाठ्यक्रम का पुनर्निरीक्षण कराया जाय और उसमें जो भी परिवर्तन हों उसे समय रहते कर लिया जाये, जब बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 के सदस्यों ने आयुर्वेद, यूनानी, होम्योपैथी एवं सिद्धा के साथ– साथ एलोपैथिक के पाठ्यक्रम विशेषज्ञों के पास इलेक्ट्रो होम्योपैथिक के वर्तमान में संचालित हो रहे पाठ्यक्रम को भेजा तब इन विशेषज्ञों ने अपनी विशेषज्ञ राय के साथ कुछ अनुकरणीय परामर्श भी दिया जोकि इलेक्ट्रो होम्योपैथिक की मान्यता के दृष्टिकोण से सर्वथा उचित था, परामर्श के साथ–साथ हर पद्धति के विषय विशेषज्ञ ने यह टिप्पणी की कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता का प्रकरण इसलिये लम्बा खिंच रहा है क्योंकि मान्यतादात्री समिति का यह मानना है कि किसी भी चिकित्सा पद्धति को मान्यता देने के लिये जो आवश्यक व वांछित मापदण्ड होते हैं उन्हें पूर्ण करने के बाद ही उस चिकित्सा पद्धति को मान्यता की सिफारिश की जा सकती है इस आशय का स्पष्ट आदेश भारत सरकार द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथिक की मान्यता के लिये गठित विशेषज्ञ समिति द्वारा प्रेषित आदेश में है, आपको याद होगा कि 18 नवम्बर, 1998 को माननीय दिल्ली हाई कोर्ट ने इलेक्ट्रो होम्योपैथिक के प्रकरण को निस्तारित करने के लिये दायर एक जनहित याचिका में आदेशित किया था कि केन्द्र सरकार सहित सभी राज्य सरकारें एवं केन्द्र शासित प्रदेश आदेश में दिये गये निर्देशों के अनुरुप इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये कानून बना कर इस चिकित्सा पद्धति का नियमन करें जिससे कि देश के लाखों इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सकों की स्थिति न्याय संगत हो सके। 24 नवम्बर, 2000 को माननीय सुप्रीम कोर्ट ने इस आदेश पर अपनी सहमति भी जतायी थी परन्तु हमारी केन्द्र सरकार ने बड़ी ही चतुराई से इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति को नियमित करने के स्थान पर मान्यता की मांग को ढाल बनाते हुये इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति की मान्यता के लिये एक विशेषज्ञ समिति का गठन कर दिया जिस समिति ने 25 नवम्बर, 2003 को अपनी रिपोर्ट भारत सरकार को प्रस्तुत की इसी रिपोर्ट में भारत सरकार को बताया कि वर्तमान में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के पास वह आवश्यक व वांछित मापदण्ड नहीं हैं जो एक मान्यता पाने वाली चिकित्सा पद्धति के लिये आवश्यक होते हैं।

इस रिपोर्ट के आते ही पूरे देश में इलेक्ट्रो होम्योपैथिक की दिशा बदल गयी, अनेक प्रयासों के बाद आज इलेक्ट्रो होम्योपैथी पुनः पूरे वैधानिक अधिकार के साथ पूरे देश में संचालित हो रही है परन्तु यह आवश्यक है कि अब इस चिकित्सा पद्धति को मान्यता मिल ही जानी चाहिये अस्तु 25 नवम्बर, 2003 को मान्यता के लिये जो आपत्तियां आयी थीं पहले हम उनका निराकरण करें और फिर मान्यता के लिये संघर्ष करें क्योंकि इतनी लम्बी अवधि बीत जाने के उपरान्त भी यदि कोई विशेषज्ञ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक के मापदण्डों पर प्रश्नचिन्ह खड़ा करे तो वह कदापि उचित न होगा। इन्हीं सारे बिन्दुओं पर विचारोपरान्त प्रदेश की एकमात्र विधि सम्मत ढंग से स्थापित व शासकीय आदेश प्राप्त इलेक्ट्रो होम्योपैथिक की राज्य स्तरीय संस्था बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 ने इस क्षेत्र में कार्य करना प्रारम्भ किया एवं यह निर्णय लिया कि आगामी सत्र से नया एवं संशोधित पाठ्यक्रम लागू कर दिया जायेगा इस नये एवं संशोधित पाठ्यक्रम को लागू करने से पहले शासन को अनुमोदन हेतु प्रेषित किया जायेगा यदि विभाग द्वारा हमारे द्वारा प्रस्तुत पाठ्यक्रम में किसी प्रकार के संशोधन की सलाह दी जायेगी तो विशेषज्ञों से परामर्श लेकर उस संशोधन को तत्काल लागू कराया जायेगा। ज्ञातव्य हो कि बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 द्वारा गठित पाठ्यक्रम संशोधन परामर्शदात्री समिति इस क्षेत्र में युद्ध स्तर पर अपना कार्य कर रही है और प्राप्त सूचनाओं के आधार पर समिति द्वारा लगभग 85 से 90 प्रतिशत कार्य को भी पूर्ण कर लिया गया है।

यह कार्य पूर्ण होते ही पाठ्यक्रम को लागू करने के लिये गठित उच्चस्तरीय समिति को प्रेषित किया जायेगा यहां से अनापत्ति (ग्रीन सिग्नल) मिलते ही पाठ्यक्रम मुद्रण हेतु जायेगा, संशोधित पाठ्यक्रम मुद्रित होने के बाद यह पाठ्यक्रम कई प्रतियों में चिकित्सा शिक्षा विभाग को प्रेषित किया जायेगा।

आजकल बहुत लोगों के मन में इस बात को जानने की जिज्ञासा है कि पाठ्यक्रम की अवधि क्या होगी ?जब गज़ट के प्रतिनिधि ने अनेक प्रयाससें के बाद इस संदर्भ में समिति के सदस्यों से बात तो जो जानकारी मिली उसके अनुसार पाठ्यक्रम की अवधि 4+1 होगी अर्थात चार वर्षों तक नियमित शिक्षण, शेष एक वर्ष क्रियात्मक प्रशिक्षण हेतु निर्धारित किया गया है।

जब हमारे प्रतिनिधि ने एक वर्षीय क्रियात्मक प्रशिक्षण के बारे में जानकारी चाही कि यह एक वर्षीय क्रियात्मक प्रशिक्षण कहाँ और कैसे दिया जायेगा ?प्राप्त जानकारी के आधार पर यह एक वर्षीय क्रियात्मक प्रशिक्षण राज्य सरकार द्वारा स्थापित जिला/जिला स्तरीय चिकित्सालय में या फिर किसी सामुदायिक/प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र पर पूरा कराया जायेगा, सफलता पूर्वक प्रशिक्षण प्राप्त करने के उपरान्त सम्बंधित/सक्षम अधिकारी द्वारा जारी प्रमाणपत्र के आधार पर कोर्स पूर्ण माना जायेगा तदुपरान्त बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 से पंजीयन कराकर वह विधि सम्मत ढंग से चिकित्सा व्यवसाय हेतु अर्ह हो जायेगा, हमारे प्रतिनिधि ने जब यह जानकारी चाही कि क्या कुछ नये विषय भी जोड़े गये हैं ?तो एक अधिकारी ने नाम न छापने की शर्त पर बताया कि हाँ कुछ नये विषय जोड़े गये हैं और कुछ के नाम बदले गये हैं जैसे वर्तमान में संचालित मेडिकल ज्यूरिसप्रूडेन्स एण्ड टॉक्सीकोलॉजी को अब फॉरेन्सिक साईन्स के नाम से जाना जायेगा।

ज्यादा और पूछने पर कहा अप्रैल में सब सामने आ जायेगा परेशान नहीं हों।

संघर्ष नहीं – स्थापित होने का धर्मयुद्ध

पूरे देश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी को मान्यता दिलाने के लिये अनेकों संगठनों द्वारा अभियान चलाया जा रहा है और सारे के सारे अपने–अपने स्तर से यह प्रयास भी करते हैं कि किसी भी तरह से इलेक्ट्रो होम्योपैथी को मान्यता मिल जाये परन्तु मान्यता है कि मिलने का नाम ही नहीं ले रही है !

जब कोई चीज़ बहुत देर तक नहीं मिलती है तो निसन्देह प्रयास करने वाले के मन में नकारात्मक ऊर्जा जन्म ले लेती है और यही नकारात्मक ऊर्जा पहले संघर्ष फिर वर्ग संघर्ष का रुप ले लेती है। इलेक्ट्रो होम्योपैथी में कमो–बेश स्थिति यही है, प्रयासों के सफल नहीं होने के पीछे सामूहिक और सकारात्मक सोच का नहीं होना भी एक मुख्य कारण है, हर प्रयासकर्ता अपने मन में यही इच्छा रखता है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी की सफलता के पीछे सिर्फ और सिर्फ उसका ही नाम हो, उसके सिवा अन्य किसी की भी चर्चा नहीं हो।

हमें इस प्रकार के चिन्तन से ऊपर उठकर यह सोचना होगा कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी का आन्दोलन एक धर्मयुद्ध है इसलिये इस आन्दोलन को धर्मयुद्ध की ही तरह लड़ना चाहिये, कर्म ही हमारा धर्म है इसी वाक्य पर सारा ध्यान देते हुये इस आन्दोलन को संचालित होना चाहिये। इलेक्ट्रो होम्योपैथी एक चिकित्सा पद्धति है और चिकित्सा पद्धति अपने कार्य और उपयोगिता के आधार पर ही स्थापित होती है।

जब तक चिकित्सा पद्धति अपनी उपयोगिता सिद्ध नहीं करती है तब तक मान्यता नहीं मिलती है, जब–जब इलेक्ट्रो होम्योपैथी ने कसौटी पर अपने को खरा साबित किया है तब–तब उसने सफलता अर्जित की है, ऐसा नहीं है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी में कार्य नहीं हो रहा है, कार्य तो हो रहा है परन्तु हम और हमारे साथी अपने इन कार्यों को सरकार तक नहीं पहुँचा पा रहे हैं इसलिये हमारे साथियों को थोड़ा सा नीतियों में परिवर्तन करते हुये इस आन्दोलन को नई दिशा देनी होगी एवं सफलता भी प्राप्त करनी होगी, हर साथी का योगदान सराहनीय होता है।

बिल ही सहारा

चर्चा में बने रहने के लिये किसी न किसी विषय की आवश्यकता होती है और उसी विषय को आधार बना कर अपने आपको चर्चा में बनाये रखने का प्रयास राजनीतिज्ञों द्वारा किया जाता है, मुद्दा कितना भी पुराना क्यों न हो परन्तु यदि वह मुद्दा जनभावना से जुड़ा होता है तो उसी मुद्दे को बार–बार उछाल कर अपनी इच्छायें पूरी की जाती हैं, यह एक ऐसी परम्परा है जो लोकतंत्र में स्थाई स्थान बना चुकी है, राजनीतिक इच्छायें पूरी करने के लिये यह व्यवस्था कुछ समय तक के लिये तो ठीक है लेकिन जब विषय किसी की रोज़ी रोटी से जुड़ा हो तो उसके साथ खिलवाड़ नहीं होना चाहिये इसका कारण यह है कि जो व्यक्ति आपसे जुड़ा है उसकी आस्थायें और भावनायें अपने नेतृत्वकर्ता से जुड़ी होती हैं परन्तु जब भावनायें आहत होती हैं तो विश्वास कमज़ोर हो जाता है एवं आन्दोलन की गति धीमी हो जाती है।

इलेक्ट्रो होम्योपैथिक आन्दोलन के साथ कमो बेश ऐसा ही है, वैसे तो पूरे देश में इलेक्ट्रो होम्योपैथिक आन्दोलन की धमक सुनाई देती है परन्तु इस आन्दोलन को निरन्तर गति देने की आड़ में कुछ नेतागण ऐसे–ऐसे वक्तव्य देते हैं जिससे कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी का भला तो नहीं होता परन्तु स्वंय को चर्चा में रहने की अपनी इच्छा की पूर्ति अवश्य कर लेते हैं। गत कई वर्षों से हमारे इलेक्ट्रो होम्योपैथिक के नेताओं को मान्यता का बिल सम्बंधी एक ऐसा अमोघ अस्त्र मिल गया है जिसको जब चाहते हैं चला लिया करते हैं जैसाकि हमारे भारत के राजनैतिक दल प्रायः यह किया करते हैं। जब–जब इन दलों को चुनावी वैतरणी पार करनी होती है तो ऐसे विषय उठा कर जन भावनायें उभारने का कार्य किया जाता है, वैसे तो भारतवर्ष में बारहों महीनें यह कार्य कहीं न कहीं होता ही रहता है, ऐसा देखा जाता है कि देश में वर्ष पर्यन्त चुनावी पर्व चलता ही रहता है अभी यह पर्व पाँच राज्यों में बड़े धूम–धाम से मनाया जा रहा है, कुछ दिनों बाद यही पर्व किसी दूसरे राज्य में मनाया जाने लगेगा और यह अन्तहीन सिलसिला तब तक चलता रहेगा जब तक कोई एक व्यवस्था नहीं बन जाती है। सस्ती लोकप्रियता पाने के लिये हर नेता अपने–अपने स्तर से मुद्दे उठाता है परन्तु कुछ मुद्दे ऐसे हैं जो हर समय भुनाये जाते हैं जैसे मन्दिर–मस्जिद का मुद्दा, आरक्षण का मुद्दा, जातीय समीकरणों का मुद्दा, वोटों के ध्रुवीकरण का मुद्दा, विकास के नाम पर छल करने का मुद्दा आदि आदि। ठीक इसी तरह से हमारे इलेक्ट्रो होम्योपैथी के नेतागण मान्यता के नाम पर मान्यता के बिल का मुद्दा बार–बार उठा कर सस्ती लोकप्रियता हासिल करने का प्रयास करते हैं।

कभी–कभी तो ऐसा लगने लगता है कि मान्यता के बिल का मुद्दा हमारे इलेक्ट्रो होम्योपैथिक नेताओं के लिये ही एक मात्र सहारा है और इसी सहारे से वह चर्चा में रहना चाहते हैं कहावत है कि डूबते को तिनके का सहारा कभी विचार करके देखें कि क्या तिनका पकड़कर कोई प्रवाह से बाहर निकल सकता है ?तो उत्तर मिलेगा नहीं, परन्तु इसी का दूसरा पहलू यह भी है कि तिनका व्यक्ति को साहस प्रदान करता है और इसी साहस के सहारे डूबता हुआ व्यक्ति बाहर निकल आता है इसलिये व्यक्ति को साहस और पराक्रम का साथ कभी नहीं छोड़ना चाहिये और कठिन से कठिन परिस्थितियों से भी पार पाया जा सकता है, एक ही विषय को लेकर विभिन्न मतों के लोग कभी भी एकता के सूत्र में वास्तविक रुप से नहीं दिख सकते हैं जो एकता दिखायी जाती है वह एकता आभासी होती है, जिस प्रकार बिम्ब और प्रतिबिम्ब परस्पर वास्तविक और आभासी होते हैं, बिम्ब को मूक प्रतिबिम्ब अक्सर छलावा देता है ।

यदि इलेक्ट्रो होम्योपैथी के आन्दोलन को वास्तव में गति देनी है तो छदम और छलावे वाली नीति से ऊपर उठकर किसी ठोस आधार को लेकर वर्तमान परिस्थितियों का वास्तविक आंकलन करते हुये आन्दोलन को गति प्रदान करें अन्यथा डूबती हुयी नाव किसी को जीवन नहीं दिया करती है, इस वास्तविकता को समझते हुये अब बिल से बाहर निकलकर यथार्थ के धरातल पर इस आन्दोलन को चलाया जाये तभी कल्याण हो सकेगा क्योंकि जीवन चलने का नाम है यहाँ विराम के लिये कोई स्थान नहीं है।

मूलस्वरुप से ही सफ़लता

हर समाज में व्यक्तियों का वर्गीकरण होता है जिसकी पहचान सफल और असफल व्यक्ति के रुप में की जाती है जो जीवन के हर पायदान को सफलतापूर्वक चढ़ जाता है समाज उसे सफ़ल व्यक्ति की संज्ञा देती है साथ–साथ उस व्यक्ति की जय–जयकार भी होती है क्योंकि समाज का स्वभाव ही ऐसा होता है कि जो मात्र सफ़लता को ही स्वीकार करता है, समाज क्या मानव का स्वभाव ही ऐसा होता है जो मात्र सफ़लता से ही आनन्दित होता है और यदि असफ़लता मिल गयी तो मानसिक क्लेश होता है, जन्म से लेकर मृत्यु तक हम सभी सफ़लता और असफ़लता की ही कहानी लिखते हैं, सफल व्यक्ति के तो लाखों प्रशंसक होते हैं परन्तु यदि वही सफ़ल व्यक्ति कहीं किसी मोड़ पर असफ़ल हो जाये और अनेक प्रयासों के उपरान्त भी वह सफ़लता पर खरा नहीं उतरे तो जो व्यक्ति कल तक वन्दनीय होता था वही आज निन्दनीय हो जाता है।

सफ़लता और असफ़लता की कहानी में प्रयास का अपना अलग ही स्थान है, कई बार प्रयास तो पूरे मनोयोग से किये जाते हैं परन्तु सफ़लता अर्जित नहीं होती है तो इससे व्यक्ति की योग्यता पर प्रश्न नहीं खड़े करने चाहिये कारण प्रयास के उपरान्त भी सफलता नहीं पाना हमें इस बात का अवसर प्रदान करता है कि हम अपने अन्तरमन में झांक कर देखें कि आखिर वह कौनसी कमी है जिसके चलते हमें अपेक्षित सफ़लता प्राप्त नहीं हो पा रही है।

असफ़लता के भय से हम यदि पथ बदल दें तो सफ़लता की हमें अपेक्षा भी नहीं करनी चाहिये, हम यहाँ पर सफ़लता और असफ़लता की चर्चा इसलिये कर रहे हैं क्योंकि सफ़लता के आदी हो चुके हमारे साथी जो असफ़लता के समय से गुज़र रहे हैं वह अपनी असफ़लता स्वीकार नहीं कर पा रहे हैं फ़लस्वरुप वे ऐसे कार्य करने लगते हैं जिससे कि अच्छे खासे चलते हुये आन्दोलन को धक्का लगता है, सफ़लता का नशा तो उनके ऊपर इस कदर हावी है कि वे सफलता पाने के लिये किसी भी हद को पार कर सकते हैं, इसके लिये वे मूल स्वरुप को नष्ट करने से भी बाज़ नहीं आ रहे हैं। सत्यता तो यह है कि विकास के लिये अनेकों परिवर्तन तो स्वीकार किये जा सकते हैं उन परिवर्तनों को विभिन्न स्तरों पर लागू भी किया जा सकता है परन्तु मूल से हट कर यह परिवर्तन लाभ के स्थान पर हानि भी पहुँचा सकते हैं। इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति में आज बहुत सारे ऐसे लोग दिखायी पड़ रहे हैं जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास के नाम पर न केवल मूल स्वरुप से छेड़–छाड़ कर रहे हैं अपितु मूल स्वरुप को नष्ट करने में भी अपनी ओर से कोई कोर–कसर नहीं छोड़ रहे हैं, ऐसे हमारे साथी आखिर क्या सिद्ध करना चाहते हैं ? यह तो वही जानें लेकिन देर–सबेर उनके किये हुये इन कृत्यों का खामियाज़ा इलेक्ट्रो होम्योपैथी और इसकी पीड़ा हमारे इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सकों को भोगना पड़ेगा, सफ़लता में लघु मार्ग(शॉर्ट कट) और यदि तरह–तरह के यत्न करके लघु मार्ग का प्रयोग करते हुये सफ़लता अर्जित भी कर ली जाये तो ऐसी सफ़लता कभी भी स्थायी नहीं हुआ करती है।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी एक चिकित्सा पद्धति है और रहेगी, उसकी सफ़लता के मुख्य दो ही आधार हैं प्रथमः– रोगी की चिकित्सा, द्वितीयः– औषधियां । इन दोनों ही आधारों पर सत्यता सिद्ध करके ही सफ़लता अर्जित की जा सकती है, इस कार्य को पूर्ण करने के लिये हम सिद्धान्तों से छेड़–छाड़ करने के स्थान पर प्रतिपादित सिद्धान्तों पर चलते हुये कार्य करें और अपनी सार्थकता सिद्ध करें। विकास के लिये जो परिवर्तन आवश्यक हैं उन्हें हम स्वीकार भी करें, "लकीर के फकीर" की परिभाषा से ऊपर उठकर कार्य करना है देशकाल, समय एवं वातावरण के अनुसार परिवर्तन होते रहते हैं और जो समाज और जो व्यक्ति इन परिवर्तनों को स्वीकार नहीं करता है वह या तो दौड़ से बाहर हो जाता है या फिर इतना पिछड़ जाता है कि उसे बराबर आने के लिये बहुत परिश्रम करना पड़ता है।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी को भी विकास की दौड़ में शामिल रखने के लिये हम सबको बहुत कार्य करने पड़ेंगे परन्तु विकास की आड़ में मूल स्वरुप से छेड़–छाड़ नहीं करें तो ही अच्छा है, बहुत कष्ट होता है जब हम यह देखते हैं कि हमारे कुछ साथी औषधि निर्माण के क्षेत्र में मनमानी कर रहे हैं, आज भले ही उन्हें अपने द्वारा किये हुये कार्यों पर गर्व हो परन्तु सत्यता तो यह है कि आने वाले दिनों में उन्हीं के द्वारा किये हुये यह कार्य उन्हीं के लिये कष्टकारी सिद्ध होंगे। एक ओर आज हमारे अधिकांश औषधि निर्माता इलेक्ट्रो होम्योपैथिक औषधियों को फूड प्रोडक्ट के नाम पर प्रस्तुत कर रहे हैं जोकि किसी भी कोण से इलेक्ट्रो होम्योपैथी के भविष्य के लिये अच्छा संकेत नहीं है वहीं दूसरी ओर हमारे कुछ साथी इलेक्ट्रो होम्योपैथिक की इन औषधियों को हर्बल मेडिसिन के नाम पर समाज में परिचित करा रहे हैं, फूड सप्लीमेन्ट हो या हर्बल मेडिसिन दोनों ही चीज़ें इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये कदापि नहीं हैं।

आज आवश्यकता है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथिक औषधियों के मूल स्वरुप को स्वीकारते हुये इलेक्ट्रो होम्योपैथी को स्थापित करवाया जाये, तदुपरान्त जो भी परिवर्तन किये जायें वह स्वीकार होंगे, हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि मैटी ने 38 औषधियां ही निर्मित की थीं, शनैः–शनैः जर्मन के वैज्ञानिकों नें इस क्षेत्र में कार्य किया। थ्यूडरक्रॉस स्वंय एवं उनके साथियों ने यह संख्या 38 से 60 कर दी परन्तु मूल स्वरुप से उन्होनें भी कोई छेड़–छाड़ नहीं की थी यह संख्या 60 से 160 भी हो सकती है परन्तु यदि मूल स्वरुप से छेड़–छाड़ की तो आधार नष्ट होता है और बिना आधार के कोई भी भवन खड़ा नहीं हुआ करता, अस्तु हमें ऐसे भवन का निर्माण करना होगा जिसका आधार मज़बूत हो जिससे कि आने वाली पीढ़ियां उसी बुनियाद पर ऐसा भवन खड़ा कर सकें जिसपर परिवर्तन की असीमित सम्भावनायें हों और इतना भव्य भवन बनें जिसपर आने वाली पीढ़ियां गर्व कर सकें।

इलेक्ट्रो होम्योपैथिक का इतिहास गौरवशाली है और इसकी गौरवगाथा हमसब व्याख्यानित भी करते हैं, हमें यह सदैव स्मरण रखना होगा कि अतीत कितना भी अच्छा क्यों न रहा हो परन्तु स्वीकारिता वर्तमान की ही होती है, हमारी स्वीकारिता इसी में है कि अतीत की धरोहर को सहेज कर रखते हुये इतने अच्छे वर्तमान का निर्माण करें जो कि प्रचलित पद्धतियों की तुलना से यदि अच्छी नहीं हों तो कम–अज़–कम स्तरहीन न हों, समाज में और चिकित्सा पद्धतियों के मध्य प्रति क्षण प्रतिस्पर्धा बनी रहती है, एलोपैथिक चिकित्सा पद्धति के विकास का भय अन्य पद्धतियों पर इस कदर हावी रहता है कि अन्य पद्धतियां होड़ में बनें रहने के लिये सतत प्रयासशील रहती हैं, इलेक्ट्रो होम्योपैथी भी इस भावना से अलग नहीं है इसलिये इसमें भी निरन्तर कार्य हो रहे हैं परन्तु इलेक्ट्रो होम्योपैथी की स्थिति अन्य पद्धतियों से एकदम भिन्न है।

अन्य पद्धतियां स्थापित हैं और शासकीय संरक्षण प्राप्त हैं उनके कार्यों के मूल्यांकन के लिये शासकीय अधिकरण भी स्थापित हैं जबकि इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सापद्धति को अभी स्थापित होने के लिये ही संघर्ष करने पड़ रहे हैं।इलेक्ट्रो होम्योपैथी वाले कितना भी काम क्यों न कर डालें न तो उनके कार्यों की सराहना होती है और न ही मूल्यांकन होता है, हमारे प्रत्येक कार्य में मीन–मेख निकाली जाती है, हमारे द्वारा किये गये नये शोधों पर विश्वास नहीं किया जाता है ऐसी स्थिति में हमें कोई ऐसा कार्य नहीं करना चाहिये जो सरकार के दृष्टिकोण से उचित नहीं हो इसलिये हमें हर कदम फूंक–फूंक कर उठाना है बस एक बार इलेक्ट्रो होम्योपैथी को स्थापित हो जाने दीजिये, हमारे कार्यों के मूल्यांकन के लिये अधिकरण गठित हो जाने दीजिये फिर आपके हर कार्य सरकार के संज्ञान में रहेंगे और आपके यही कार्य जिसे आज की तारीख में अनदेखा किया जाता है वही कल सराहना का विषय होगा, इसलिये संयम का परिचय देते हुये मूल स्वरुप से कोई भी छेड़–छाड़ नहीं करें।

हमारी खुशी का कारण क्या है ?

वैसे तो हर खुशी का एक कारण जरुर होता है, कभी खुशी व्यक्तिगत होती है तो कभी सामूहिक, घर में धन सम्पत्ति आ जाये तो व्यक्तिगत खुशी हो जाती है और जब सरकारी कर्मचारियों को बोनस मिलता है या वेतन में वृद्धि होती है तो सामूहिक खुशी होती है, कभी–कभी ऐसा भी देखा जाता है कि पड़ोसी के बेटे की शादी में हम भी खुशी मना लेते हैं लेकिन वास्तविक आनन्द तो तभी आता है जब खुशी खुद को मिली हो।

हम तो इलेक्ट्रो होम्योपैथ हैं हमें दूसरों की खुशी में भी खुशी होती है, जिनको मिलता है वह भले ही इतने खुश न हों जितना हम खुश हो रहे हैं, हमारे पाठक शायद अब यह जानना ही चाहेंगे कि हमारी खुशी का कारण क्या है ?फरवरी के दूसरे सप्ताह के प्रथम चरण में वॉट्सएप / फेसबुक पर हमारे इलेक्ट्रो होम्योपैथ भाई खुश होने लगे, एक दूसरे को बढ़–चढ़ कर बधाईयां देने लगे, बधाईयां लेने व देने में जो खुशी दिखाई पड़ी उसके दर्शन इलेक्ट्रो होम्योपैथी जगत में कम ही होते हैं, देर से ही सही हमारे मन के इलेक्ट्रो होम्योपैथ को भी खुशी ने छूना चाहा लेकिन मन ने कहा कि क्या वास्तव में खुश होने का कोई कारण है या हम नाहक ही खुश होते जा रहे हैं वैसे भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी में जब भी कोई खुशी की बात सुनाई पड़ती है तो मन न जाने क्यों विचलित सा होने लगता है और किसी न किसी आशंका से घिर जाता है, क्योकि आज तक जितनी भी खुशियां आई हैं वे इतने दबे पाँव आई हैं कि उनका आने तक का एहसास नहीं हो सका, यहाँ तो बिजलियां गिरने का ही एहसास है लेकिन हम तो ठहरे सच्चे इलेक्ट्रो होम्योपैथ बिजलियों में भी रौशनी तलाश लेते हैं।

हमारा नाता तो बिजलियों से बहुत गहरा है, लोग एक बिजली से आहत हो जाते हैं यहाँ तो पाँच–पाँच बिजलियां हमें हर समय आशीर्वाद देती हैं, लोग बिजलियों से डरते हैं, इकलौते हम इलेक्ट्रो होम्योपैथ हैं जो बिजलियों से खेलते हैं, बिजलियां भी क्या हैं ?जब असर करती हैं तो इनका रंग देखने लायक होता है! जो व्यक्ति पाँच–पाँच बिजलियों के घेरे में रहता हो वह एक आकाशीय बिजली से क्यों डरे गा ?दोनों बिजलियों में समानता भी बहुत है, वहां भी तेज़ी है यहां भी तेज़ी है, वहां प्रकाश तो यहां पर ऊर्जा, वहां विनाश तो यहां सृजन। कहावत है कि युद्ध के मैदान में वही विजयी होता है जो बिजली सा टूट पड़ता है, यहां भी गम्भीर से गम्भीर बीमारी पर यह बिजलियां बिजली सा असर करती हैं। बिजलियों पर खुशी ज़ाहिर करें तो अच्छा लगता है लेकिन पिछले दिनों हम जिस बात पर खुश थे वह बिलकुल वैसा ही था जैसे किसी पुराने गीत का मुखड़ा कि बेगाने की शादी में अब्दुल्ला दीवाना ।

अब हम मुख्य बिन्दु पर आते हैं कि हमारे बेगानी खुशी का कारण क्या था ?वाट्सएप व फेसबुक पर एक मेसेज वाइरल हुआ कि आयुष चिकित्सकों को एलोपैथिक औषधियों के प्रयोग का अधिकार मिल गया है जब हमने यह जाना तो मन में एक साथ कई प्रश्न कौंधने लगे कि क्या इलेक्ट्रो होम्योपैथी को मान्यता मिल गयी है ?क्या सरकार ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी को वैकल्पिक चिकित्सा पद्धति के रुप में स्वीकार कर लिया है ? क्या इलेक्ट्रो होम्योपैथी आयुष का अंग बन गयी है ?मन ने स्वंय ही प्रश्न किये और स्वंय ही उत्तर तलाशे तो हर उत्तर नकारात्मकता का संकेत दे रहा था, मन को हम मनवाने का भरपूर प्रयास कर रहे थे कि ऐ मेरे मन .. झूठ ही सही पर कुछ पल को मान लो कि जो खुशी दिखायी जा रही है उसमें कुछ तो सच्चाई होगी ! लेकिन मन ठहरा खाँटी इलेक्ट्रो होम्योपैथ, जो आसानी से मानता ही नहीं है, कहा जाता है न कि दिल है कि मानता नहीं दिल माने भी तो कैसे ?दिल सच्चाई को नकार नहीं पाता और गुज़रे तीस सालों में हमने इतने उतार–चढ़ाव, इतनी अच्छी–बुरी घटनायें देखीं हैं जो आंखों देखी पर तो भरोसा करती नहीं हैं तो कानों सुनीं पर क्या करेंगी ?

हम अपने साथियों को बताना चाहते हैं कि कोई भी आदेश हो जाये परन्तु जब तक उसमें इलेक्ट्रो होम्योपैथी शामिल नहीं है तब तक वह हमारे लिये व्यर्थ है ! अभी तो इलेक्ट्रो होम्योपैथी को स्थापित होना ही शेष है पहले स्थापित हो फिर शासकीय संरक्षण मिले तब आनन्द की कोई बात होती है।

जिस सर्वोच्च न्यायालय के आदेश को लेकर यह खुशी मनायी जा रही है पहले तो हमें उस आदेश का अध्ययन करना चाहिये फिर यह विचार करना चाहिये कि यह आदेश जिन लोगों के लिये हुआ है क्या हम उस श्रेणी में आते हैं ? आयुष के चिकित्सकों को जो लाभ मिलते हैं उससे हमें क्या लेना–देना ! हमारे कुछ साथी यह तर्क देते हैं कि आज जो कुछ भी आयुष को मिला है उसी को आधार मानकर उस सुविधा की मांग हम भी तो कर सकते हैं ! इसका सीधा– साधा जवाब है कि पहले आप उस श्रेणी में तो आईये, दूसरी बात हमें कभी नहीं भूलनी चाहिये कि न्यायालयों द्वारा जो आदेश होते हैं वे घटनाओं, परिस्थतियों और साक्षों पर निर्भर होते हैं, एक आदेश जो किसी एक के लिये राहत देते हैं वही वह दूसरे के लिये काल बन जाते हैं। वाद संख्या 10404 को ही लेलें जो बोई ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 के लिये राहत लेकर आया और इसी आदेश की नकल दूसरों के लिये काल बन गयी।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी में प्रायः यह देखा गया है कि यदि किसी एक को कोई एक अच्छा आदेश प्राप्त हो जाता है तो हमारे साथी उसी तरह का आदेश पाने के प्रयास में जी जान से लग जाते हैं, वे यह भूल जाते हैं कि जो आदेश जिसे प्राप्त हुआ है वह उसे किन परिस्थितियों में एवं किन कारणों से मिला है यदि इस विषय पर तनिक भी विचार कर लें तो सम्भव है कि उन्हें भी कुछ राहत अवश्य मिले परन्तु आज के युग में न तो किसी को इतना इन्तेज़ार है और न ही संयम, फलस्वरुप सदैव कुछ न कुछ कर गुज़रने की इच्छा में कुछ ऐसा कर गुज़रते हैं जो स्वयं के साथ–साथ समूचे इलेक्ट्रो होम्योपैथों के लिये घातक हो जाती है, दूसरा तथ्य यह भी समझना चाहिये कि आदेश बदलने में भी देर नहीं लगती है। जिस सुप्रीमकोर्ट के आदेश को आधार मानकर हमारे साथी प्रसन्न हो रहे हैं पहले वह उस आदेश की वास्तविकता को भी समझें, न्यायालयों के आदेशों का अनुपालन एवं क्रियान्वयन सरकारें ही करती हैं एवं जब तक आदेश क्रियान्वित नहीं होते हैं तब तक उन्हें सरकारी संरक्षण प्राप्त नहीं होता है।

थोड़े से अतीत में जाईये आज से 19 वर्ष पूर्व 18 नवम्बर, 1998 को दिल्ली हाई कोर्ट ने दो महत्वपूर्ण आदेश जारी किये जिसमें आदेश के साथ–साथ केन्द्र सरकार सहित सभी राज्य सरकारों एवं केन्द्र शासित प्रदेशों को यह निर्देश भी जारी किया था कि 18 नवम्बर, 1998 के इस आदेश को अपने–अपने स्तर से अपने प्रदेशों में लागू कर क्रियान्वित करें लगभग 19 वर्ष पूरे होने को आ रहे हैं किसी भी राज्य सरकार ने इस आदेश को लागू करने में कोई रुचि नहीं दिखायी यदि किसी भी राज्य ने इस आदेश का अनुपालन कर दिया होता तो आज इलेक्ट्रो होम्योपैथी की स्थिति बहुत भिन्न होती, एक हम ही नहीं सभी इलेक्ट्रो होम्योपैथों का भोगा हुआ अनुभव है अब आती है सुप्रीम कोर्ट की बात तो आप यह भी जान लें कि जब सरकार इस आदेश के लिये सुप्रीम कोर्ट गयी तो सुप्रीम कोर्ट ने भी आदेश की यथास्थिति बनाये रखी, लगभग 17 वर्ष सुप्रीम कोर्ट के इस आदेश को भी हो गया है किस सरकार ने क्या किया ?

यह हम सभी बखूबी जानते हैं यह दोनों उदाहरण हर समय हमारे साथियों को अपने दिमाग में रखना चाहिये कि जब तक सरकार की इच्छा शक्ति नहीं होती है तब तक कुछ भी नहीं होता है यदि सुप्रीम कोर्ट ने आयुष चिकित्सकों को कुछ एलोपैथिक दवाईयां प्रयोग करने की छूट दे दी है तो उससे हमें क्या लाभ ?और क्या हानि ! एक ओर जहां सुप्रीम कोर्ट का यह आदेश वहीं दूसरी ओर पूरे देश का आई0एम0ए0 लामबन्द हो चुका है और इस आदेश को स्वीकार ही नहीं कर रहा है, इस प्रकार इस विषय पर हमारी प्रसन्नता का औचित्य क्या है ? यदि इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये सरकार द्वारा कोई महत्वपूर्ण निर्णय लिया जाता तब तो हमारे साथियों को खुशी से झूमने का अवसर अवश्य प्राप्त होता ! ऐसे तो हमारे साथियों की प्रसन्नता बेमकसद सी लगती है, हम ऐसा करें कि एक दो सरकारें नहीं अपितु पूरे देश की राज्य सरकारें इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये कानून बनाने को विवश हो जायें यह कोई दिवा स्वप्न नहीं है, सब कुछ हमारे, आपके, सबके प्रयासों से सम्भव हो सकता है।

हम जिस इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सा विधा के अनुयायी हैं वह अपने आप में पूर्ण है उसकी पूर्णता में कोई सन्देह नहीं है, जब–जब कोई सन्देह जन्म लेता है तब–तब उसके पीछे हमारी ही सोच होती है। इलेक्ट्रो होम्योपैथी की पूर्णता एवं वैज्ञानिकता में कोई सन्देह नहीं है इसलिये हम अपने मन की संकीर्णता से ऊपर उठकर केवल इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास के लिये चिन्तन करें और यथा सम्भव इस चिन्तन को कार्य रुप में भी परिवर्तित कर दें, धीरे–धीरे स्थितियां सामान्य होनें लगेंगी। आज जो यह प्रश्न उठ रहा है कि आपके प्रसन्न होने की वजह क्या है ?तो हमारे द्वारा किया गया कार्य इस प्रश्न का उत्तर स्वयं दे देगा हमारी प्रसन्नता दूसरे के कन्धों पर नहीं अपितु अपने कार्यों पर होनी चाहिये, किसी दूसरी पद्धति का सहारा लेकर यदि हम आगे बढ़ते हैं तो निश्चित रुप से हम उस पद्धति का विकास कर रहे हैं जिसकी सहायता हम परोक्ष रुप से ले रहे हैं।

जब इलेक्ट्रो होम्योपैथी अपने आप में स्वयं सक्षम है तो हम किसी अन्य के पिछलग्गू क्यों बनें ? स्वयं में आत्म विश्वास को जन्म दें और अपनी राह स्वयं बनायें, जिस चमत्कार के पीछे हम सब लालायित हैं और उसे पाने के लिये उसी अंधी दौड़ में भागे जा रहे हैं हमें उससे बाहर निकलना है और उस बाधा को पार करना है जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास में बाधक सिद्ध हो रही हैं इन बाधाओं को दूर करना अब कोई कठिन काम नहीं बचा है, साधन और शासन इलेक्ट्रो होम्योपैथी के पक्ष में है हमें सिर्फ काम करते हुये अपनी उपयोगिता सिद्ध करनी है और वास्तविक प्रसन्नता की वह राह स्वयं तैयार करनी है तभी प्रसन्न होने का सुअवसर है।

पड़ोसी देशों से भी उठनी चाहिये इलेक्ट्रो होम्योपैथी की आवाज़

यह ध्रुव सत्य है कि जब बहुत दिनों तक लगे रहने के उपरान्त सफलता नहीं मिलती है तो व्यक्ति के मन में या तो निराशा जन्म लेती है या फिर धीरे–धीरे मोह भंग होने लगता है जबकि निराशा और मोह भंग से काम नहीं बनता है, सफलता न मिलने का कारण तलाशने होते हैं और जो कारण सर्वाधिक उपयुक्त लग रहा है उस पर तत्काल कार्य प्रारम्भ कर देना चाहिये,लेकिन कार्य करने के पहले यह निश्चित कर लेना चाहिये कि आज जो कारण उन्हें उपयुक्त लग रहा है कल वही उनके लिए कष्टकारी न बन जाये।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी का आन्दोलन पिछले 150 वर्षों से पूरे देश में विभिन्न स्तरों में चलाया जा रहा है लेकिन जो अपेक्षित परिणाम आने चाहिये वह नहीं मिल रहे हैं, ऐसा नहीं है कि सफलता नहीं मिली है परन्तु जो सफलता प्राप्त हुई है वह सिर्फ जीवित रहने भर के लिए है या दूसरे शब्दों में 10–15 वर्षों के अन्तराल में कोई सुखद सूचना मिल जाती है और उसे ही हम उपलब्धि मान लेते हैं।

आज़ादी के बाद इलेक्ट्रो होम्योपैथी में बहुत बदलाव हुये हैं तमाम उतार चढ़ाव के बाद आज इलेक्ट्रो होम्योपैथी मज़बूत स्थिति में है परन्तु जो पीढ़ी वर्षों से लगी है वह कोई स्थायी परिणाम चाहती है।नई पीढ़ी तो नई पीढ़ी जो पुरानी पीढ़ी के लोग हैं वह भी स्थिति में बदलाव चाहते हैं और बदलाव पाने के लिए जो कुछ भी सम्भव है वह कर गुजरने में हिचकिचा नहीं रहे हैं, तरह तरह की धारणायें और सुझाव आते रहते हैं पिछले दिनों इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास में आड़े आ रहे तत्व विषयक आयोजित गोष्ठी में विभिन्न विचारकों ने अपनी–अपनी राय दी और यह भी कहा कि अब ज़्यादा समय नष्ट नहीं करना चाहिये क्योंकि ज्यों ज्यों समय बढ़ता जायेगा त्यों त्यों स्थितियों में परिवर्तन होता जायेगा और कहीं ऐसा न हो जाये कि स्थितियां इतनी विकट हो जायें जिनका कि हम सामना न कर पायें, कुछ वक्ताओं का मानना था कि वर्तमान में जो आन्दोलन चलाया जा रहा है उसके स्वरूप में परिवर्तन किया जाये क्योंकि जिन नीतियों के साथ वर्तमान में यह आन्दोलन चलाया जा रहा है वह न तो उपयोगी है और न ही समयोचित अस्तु जितने भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी के जिम्मेदार आन्दोलन के संचालक हैं उन्हें अपनी सोच में परिवर्तन कर एक राय होकर आन्दोलन चलाना चाहिये। एक बुजुर्ग विचारक ने कहा कि कहीं कोई परेशानी नहीं है सब अपने अपने ढंग से आन्दोलन चला रहे हैं इसीलिए आन्दोलन की दिशा विकृत हो रही है, समय रहते इन सब लोगों को एक मंच पर आकर कार्य करना चाहिये, बिल आज आयेगा बिल कल आयेगा, जैसे शगूफे नहीं छोड़ने चाहिये, मान्यता इतने दिनों में मिल जायेगी या मान्यता हम ही दिलायेंगे ऐसी बचकानी बातों से आन्दोलन कमज़ोर होता है और कमज़ोर आन्दोलन चिकित्सकों के मध्य अविश्वास को जन्म देता है। एक इलेक्ट्रो होम्योपैथी के समर्थक व हितैषी ने कहा कि सबकुछ होते हुए भी देश की सरकार हमारी बात नहीं सुन रही है तो पड़ोसी देशों से सम्पर्क कर इलेक्ट्रो होम्योपैथी की बात उठवानी चाहिये जैसे श्रीलंका, भूटान। इस पर अन्य वक्ता ने कहा कि सार्क देशों में सिर्फ भारत वर्ष का बोलबाला है पाकिस्तान व बंगलादेश भारत की दृष्टि में स्वयं विवादित हैं श्रीलंका अपनों से ही परेशान है नैपाल भूटान इतने छोटे हैं कि उनकी आवाज़ कितना प्रभावित करेगी इसका निर्णय आप स्वयं कर सकते हैं, गोष्ठी में यह भी बताया गया कि चिकित्सा पद्धतियों की मान्यता का विषय केवल भारत वर्ष व एशियायी देशों में है यूरोपीय व अन्य राष्ट्रों में चिकित्सा पद्धतियों की मान्यता सम्बन्धित कोई विषय ही नहीं होता है क्योंकि वहां पर मात्र एलोपैथी को ही वैज्ञानिक चिकित्सा पद्धति के रूप में ही स्थान प्राप्त है। अन्य चिकित्सा पद्धति के चिकित्सक सरकार को इस बात के लिए आश्वस्त करते हैं कि वह जिस पद्धति से चिकित्सा व्यवसाय कर रहे हैं वह अहानिकर है और उससे किसी भी रोगी को कोई हानि नहीं होगी और यदि कोई हानि होती है तो उस हानि का उत्तरदायी वह चिकित्सक स्वयं होगा। इस तरह से मान्यता होना न होना वहां कोई अर्थ नहीं रखता है।

चूंकि भारत वर्ष में आदिकाल से आयुर्वेद अस्तित्व में रहा है परन्तु जब जब यह गुलाम हुआ तब तब शासनकर्ताओं ने अपनी पद्धतियां थोपी हैं। आदिकाल से आयुर्वेद अस्तित्व में रहा है परन्तु जब जब यह गुलाम हुआ तब तब शासनकर्ताओं ने अपनी पद्धतियां थोपी हैं।

जिज्ञासुओं के लिए शुभ उपहार

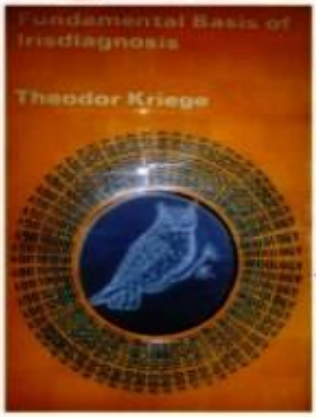

कनीनिका निदान
आइरिस विज्ञान की
एक मात्र पुस्तक
Iris Diagnosis
136 Page
&
Price ₹40 only
डाक खर्च अतिरिक्त
आपके लिये अब
ऑनलाइन बुकिंग
की भी सुविधा
अपना नाम, पूरा पता
डाक का पिनकोड
+91 9415074806, 9450153215
9450791546, 9415486103
पर S.M.S. कर सकते हैं
Conditions applied
सम्पर्क करें
इलेक्ट्रो होम्योपैथिक केन्द्र
127/204 एस जूही, कानपुर–208014

इलेक्ट्रो होम्योपैथिक गाइडें — मटेरिया मेडिका ₹ 25, फार्मेसी ₹ 5, फिलॉसोफी ₹ 30. प्रैक्टिस ऑफ मेडिसिन ₹ 30, जनस्वास्थ्य ₹ 50

इलेक्ट्रो होम्योपैथिक परीक्षायें 28 मार्च से

M.B.E.H. की वार्षिक, F.M.E.H. की सेमेस्टर तथा A.C.E.H. की परीक्षा आगामी 28 मार्च, 2017 से प्रस्तावित हैं। F.M.E.H. एवं A.C.E.H. परीक्षाओं की सेमेस्टर परीक्षा का वार्षिक कैलेण्डर आपको पूर्व में भेजा जा चुका है। दिसम्बर सेमेस्टर के लिये यदि कोई छात्र फार्म भरने से छूट गया हो तो उसे मार्च सेमेस्टर में सम्मिलित होने हेतु अविलम्ब फार्म शुल्क के साथ कार्यालय को प्रेषित करें।

M.B.E.H. की वार्षिक की परीक्षायें दो पालियों में होंगी एवं F.M.E.H. की सेमेस्टर तथा A.C.E.H. की परीक्षायें केवल प्रथम पाली में होंगी। यह जानकारी बोर्ड के रजिस्ट्रार /परीक्षा प्रभारी डा0 अतीक अहमद ने गज़ट को एक भेंट में दी।

डा0 अहमद ने बताया कि परीक्षाओं को पारदर्शी व नकल मुक्त बनाने के व्यापक प्रबन्ध किये गये हैं इसकी सूचना केन्द्र व्यवस्थापकों को प्रेषित की जा रही है परीक्षा शान्ति पूवर्क सम्पन्न हो इस हेतु परीक्षा केन्द्रों को निर्देशित कर दिया गया है। सभी केन्द्रों को परीक्षार्थियों के प्रवेश पत्र मार्च के द्वितीय सप्ताह में उपलब्ध करा दिये जायेंगे।

परीक्षा कार्यक्रम इस प्रकार है :–

BOARD OF ELECTRO HOMOEOPATHIC MEDICINE,U.P.

8-Lal Bagh, Kamla Sharma Marg, Lucknow-226001 E-mail registrarbehmup@gmail.com

PROGRAMME FOR EXAMINATION March 2017

Name of the course	28 th March, 2017 Tuesday		29 th March, 2017 Wednesday		30 th March, 2017 Thursday		31 st March, 2017 Friday
	1st. Meeting	2nd Meeting	1st. Meeting	2nd Meeting	1st. Meeting	2nd Meeting	1st. Meeting
M.B.E.H. 1st. Professional	Anatomy 1st.	Anatomy 2nd.	Physiology 1st.	Physiology 2nd.	Pharmacy	Philosophy	XX
M.B.E.H. 2nd. Professional	Pathology 1 st.	Pathology 2nd.	Hygiene and Health	M. Juris.Prud. & Toxicology	Materia Medica	Pract of Med. 1 st.	Practice of Medicine 2 nd.
M.B.E.H. Final Professional	Midwifery & Gynics. 1st.	Midwifery & Gynics. 2nd.	Opthalmology 1st.	Opthalmology 2nd.	Pract. of Med. 1st.	Pract of Med. 2nd.	Materia Medica
F.M.E.H. 1st. Semester	Anatomy & Physiology	XX	Pharmacy & Philosophy	XX		XX	XX
F.M.E.H. 2nd. Semester	Pathology	XX	Hygiene & Health	XX	Environmental Science	XX	XX
F.M.E.H. 3rd. Semester	Opthalmology including E.N.T.	XX	M.Jurisprudence & Toxicology	XX	Dietetics	XX	XX
F.M.E.H. Final Semester	Obstetrics & Gynaecology	XX	Materia Medica	XX	Practice of Medicine	XX	XX
A.C.E.H.	Anatomy & Physiology	XX	Pharmacy-Philosophy & Materia Medica	XX	Pathology-Hygiene & Health-M.Jrisprudence &Toxicology	XX	Midwifery-Gynics Opthalmology encl. E.N.T. & Practice of Med.

Timing < 1st. Meeting : 8:00 A.M.to 11:00 A.M.
2nd. Meeting : 2:00 P.M. to 5:00 P.M.

Ateeq Ahmad
Examination Incharge